अध्याय-10

बानर

नाम हमर थिक बानर
हम फानी बाहा ओ कानर ।।
हम फुनगी पर चढ़ि जाइ
कनिओ ने कतहु डेराइ ।।

हम कतहु ने रोपी गाछी
पहिलुक फल हमही चाखी ।।
हम खेतहुमे पटि जाइ
खेरही ओ मरुआ खाइ ।।
धानक ओ गहुमक सीस
हम नोचि-नोचि दस बीस ।।
किछु सुररि सुररिकेँ फाँकी
छिड़िआबी ठामहि बाँकी ।।
हम नारिकेर नहि खाइ
भुखले बरु रहि जाइ ।।

उग्रनाथ झा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि प्रश्नक उत्तर दिअ–
   (क) बानर की सब करैत अछि ?
   (ख) बानर कोन-कोन उपद्रव करैत अछि ?
   (ग) बानर नारिकेर किएक नै खाइत अछि ?
   (घ) एहि कविताक अनुसार बानर की सब नहि करैत अछि।
2. वाक्यमे प्रयोग करू
   फुनगी, गाछी, फल, नारिकेर, खेत
3. (क) एहि कवितामे जे किहु कहल गेल अछि, तकर अतिरिक्त बानर की सब करैत अछि ?
   (ख) बानरक अतिरिक्त कोन-कोन जीव फसिलकेँ नष्ट करैत अछि ?

(ग) कोन-कोन जीवकेँ मनुष्य पोसैत अछि ?

(घ) कोन-कोन जीव फनैत अछि ?

(ङ) शाकाहारी एवं मांसाहारी जीवक सूची बनाउ।

(च) अपना ओतय उपजय बला अन्नक सूची बनाउ।

4. भाषा अध्ययन :

कोनो व्यक्ति, वस्तु ओ स्थानक नामकेँ संज्ञा कहल जाइछ। जेना-राम, मोहन, गंगा, वानर आदि एहि पाठसँ संज्ञा शब्द चुनू।

बाहा- कानर- सीस- सुररि-सुररि-

शब्दार्थ :

बाहा–पानि बहैक बाट, नाला, नाली

सुररि-सुररि–सुरड़ब, डंटी सँ सबटा फूल पत्ती वा फल तोड़िकय सुन्न कय देब

सीस–धान आदि अन्नक दानाक गुच्छ।

बरु–भने

फुनगी–गाछक सबसँ उपरका भाग

पटि जायब–पसरि जायब/फैल जायब

चाखी–चाखब, स्वादब, चीखब

खेरही–एक प्रकारक अन्न/मूँग

■